Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत लोग और अर्थव्यवस्था

कक्षा - 12

अध्याय - 3

भूसंसाधन तथा कृषि

भाग - 6

पंकज वैष्णव

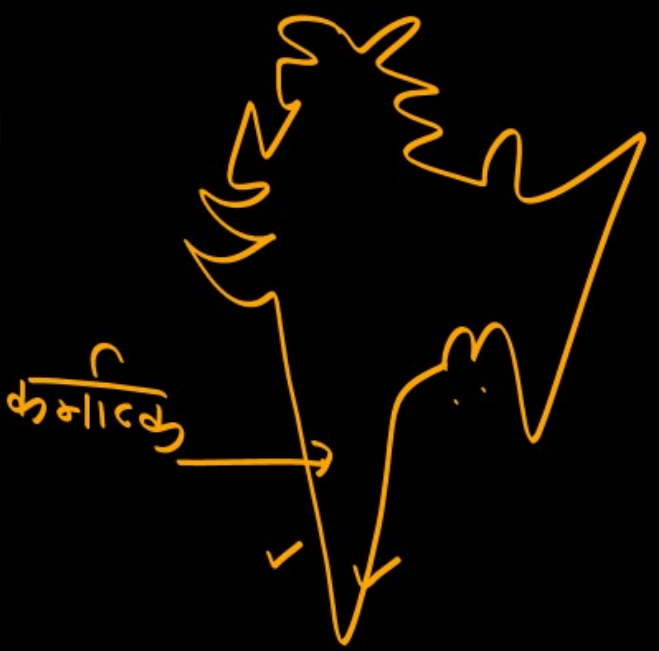
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q:- कॉफी की प्रमुख किस्में हैं :-

(a) अरेबिका
(b) रोबस्टा
(c) लिबेरिका
(d) उपरोक्त सभी

✓ रोपण कृषि



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q:- भारत में चाय का सर्वाधिक उत्पादन _____ राज्य में किया जाता है।

(a) आंध्रप्रदेश

(b) असम ✓

(c) कर्नाटक

(d) राजस्थान

रोपण कृषि

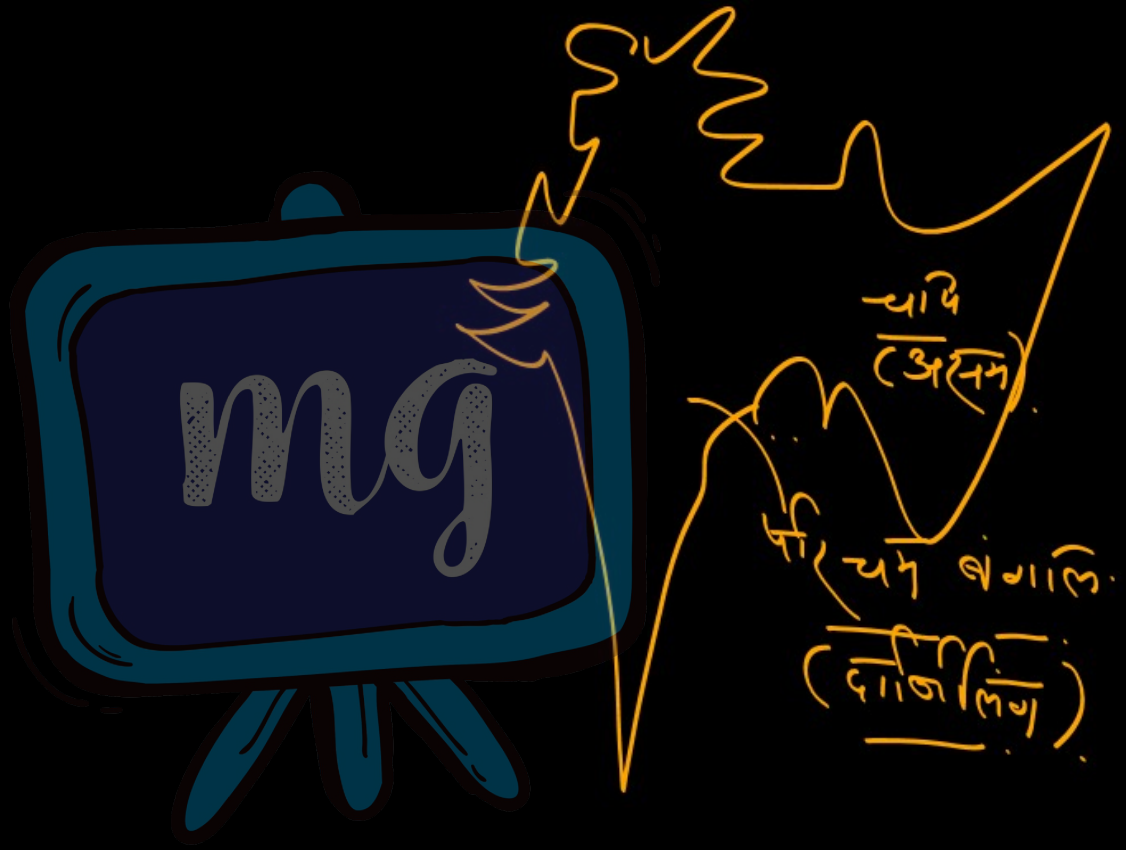
चाय →



mg

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q:- भारत में कृषि वैज्ञानिक एम. स्वामीनाथन के नेतृत्व में ..... क्रांति शुरू हुई।

(a) श्वेत → दूध

(b) पीली → तिलहन

(c) हरित →

(d) नीली → मछली

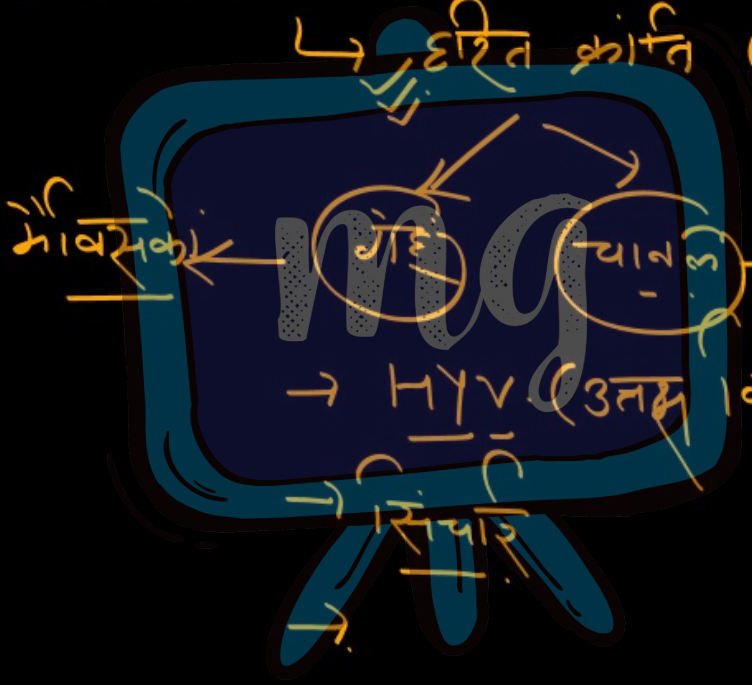
mg

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

एग. स्वामीनाथन

↳ हरित क्रांति (1960-70s)



मैक्सिको ← गेहूँ → चावल → फिलीपींस

→ HYV (उच्च उत्पादकता के बीज)

→ सिंचाई

→

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

फसलें

फसल	जलवायु	तापमान	वर्षा सेमी.	मिट्टी	प्रमुख उत्पादक क्षेत्र
चावल	उष्णकटिबंधीय	25°C	150	गहरी उर्वर चिकनी या दोमट मिट्टी	पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, पंजाब
गेहूँ	शीतोष्ण	10°-20°C	80	हल्की दोमट, बलुआ, चिकनी मिट्टी	उत्तर प्रदेश, पंजाब हरियाणा, राजस्थान
ज्वार	उष्णकटिबंधीय	26°-38°C	30-65	हल्की दोमट, काली चिकनी मिट्टी	महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, राजस्थान

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

फसल	जलवायु	तापमान	वर्षा सेमी.	मिट्टी	प्रमुख उत्पादक क्षेत्र
बाजरा	उष्णकटिबंधीय	25°-35°C	40-50	दोमट, बलुई, रेतीली	राजस्थान,उत्तरप्रदेश
मक्का	अर्द्धशुष्क	21°-27°C	50-100	गहरी दोमट चिकनी या कॉप	कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, बिहार, राजस्थान
कपास	उष्ण तथा उपोष्ण कटिबंधीय	21-30°C	50-75	काली मिट्टी (कपासी मिट्टी)	महाराष्ट्र,गुजरात, आंध्रप्रदेश, पश्चिम बंगाल
जूट	उष्णकटिबंधीय (उष्ण-आर्द्र)	24-35°C	125-150	जलोढ़ या कॉप मिट्टी	पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड
गन्ना	उष्णकटिबंधीय	20-26°C	150	दोमट मिट्टी	उत्तरप्रदेश,महाराष्ट्र, तमिलनाडु,कर्नाटक

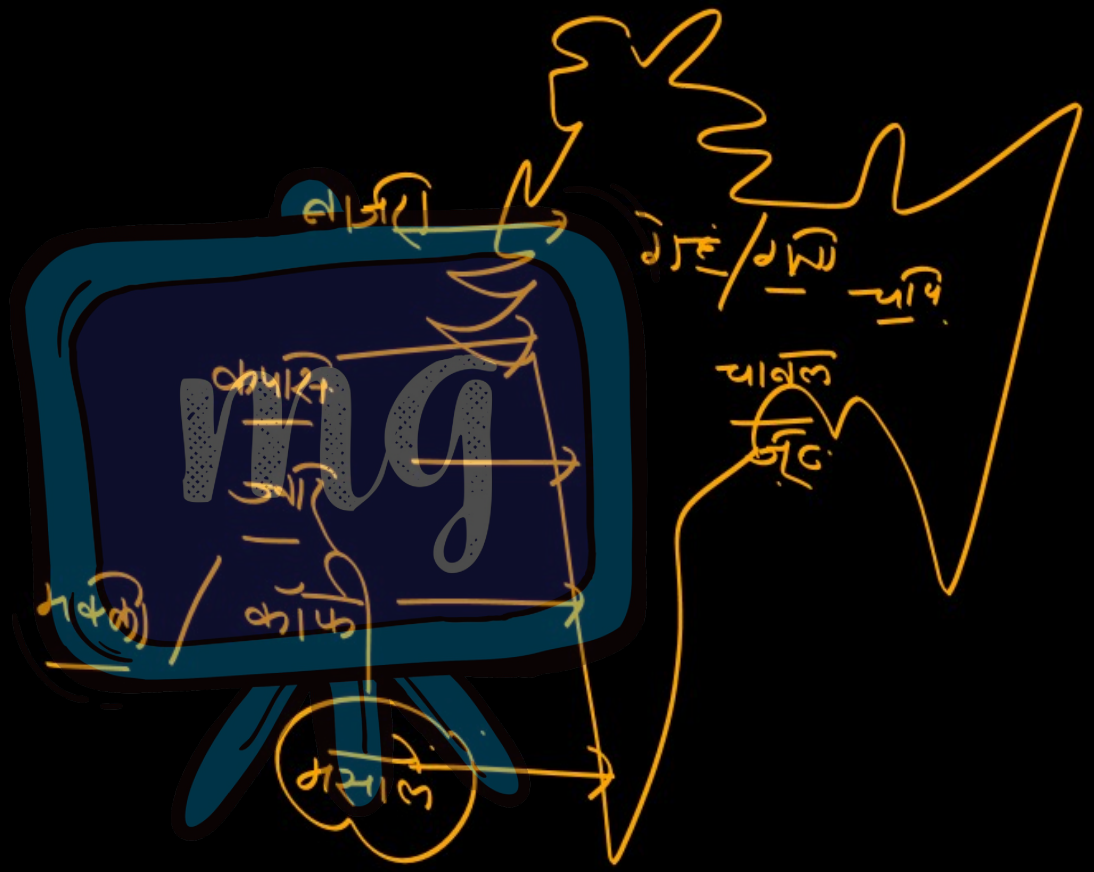
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चाय	उष्ण तथा उपोष्ण कटिबंधीय	24-30°C	150-250	भुरभुरी दोमट मिट्टी	असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, त्रिपुरा
कॉफी	उष्ण व आर्द्र जलवायु	16°-28°C	150-250	भुरभुरी दोमट मिट्टी	कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मानसून (वर्षा)

33%

भारतीय कृषि की समस्याएँ

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता
   - भारत में केवल एक-तिहाई क्षेत्र में ही सिंचाई हो सकती है।
   - मानसून की अनिश्चितता एवं अनियमितता से कृषि पर नकारात्मक प्रभाव
2. निम्न उत्पादकता
   - अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा भारत में फसलों की उत्पादकता कम है।
   - शुष्क क्षेत्रों में मोटे अनाज, दालें, तिलहन की खेती की जाती है यहाँ इनकी उत्पादकता कम है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता
   - आधुनिक कृषि से लागतें बहुत आती है।
   - छोटे व सीमांत किसान कर्ज लेने के कारण समस्याग्रस्त रहते हैं।

4. भूमि सुधारों की कमी
   - हालांकि स्वतंत्रता पश्चात जमींदारी प्रथा का उन्मूलन कर भूमि सुधार कार्यक्रम चलाये गये थे परन्तु कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण ये पूर्ण रूप से लागू नहीं हो पाये।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

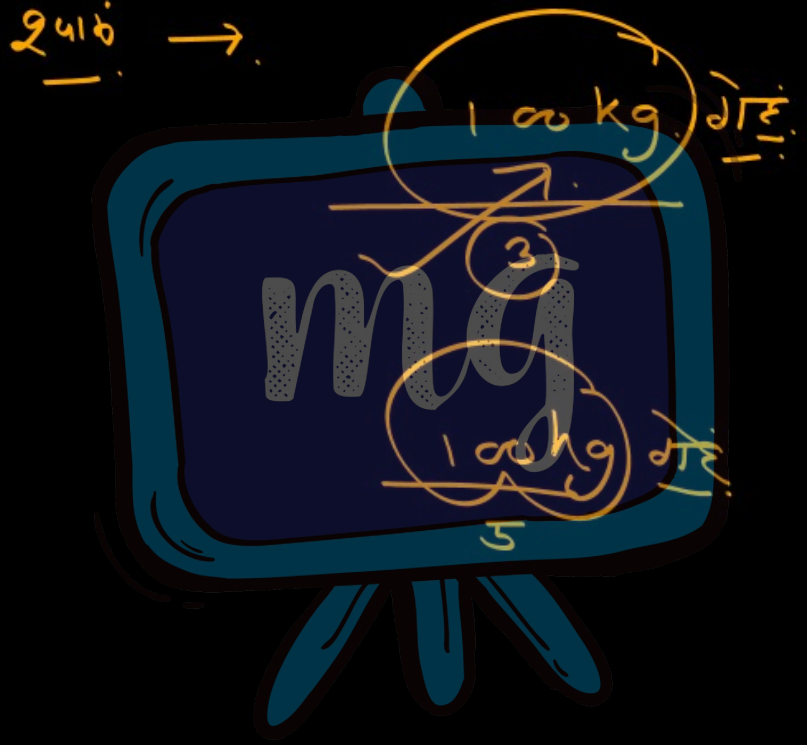
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

5. छोटे खेत विखंडित जोत
   - भारत में सीमांत व छोटे किसान अधिक हैं।
   - 60% किसानों के पास 1 हैक्टेयर से छोटा भूजोत है।
6. वाणिज्यीकरण का अभाव
7. व्यापक अल्प रोजगारी
8. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER





Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

सततता

सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMSA)

सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन कृषि को अधिक विशिष्ट, स्थायी, पारिश्रमिक और जलवायु के अनुकूल बनाने के लिए स्थान विशिष्ट एकीकृत/समग्र कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देकर और उपयुक्त मिट्टी और नमी संरक्षण उपायों के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना हैं। सरकार परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) जैसी योजनाओं के माध्यम से देश में जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

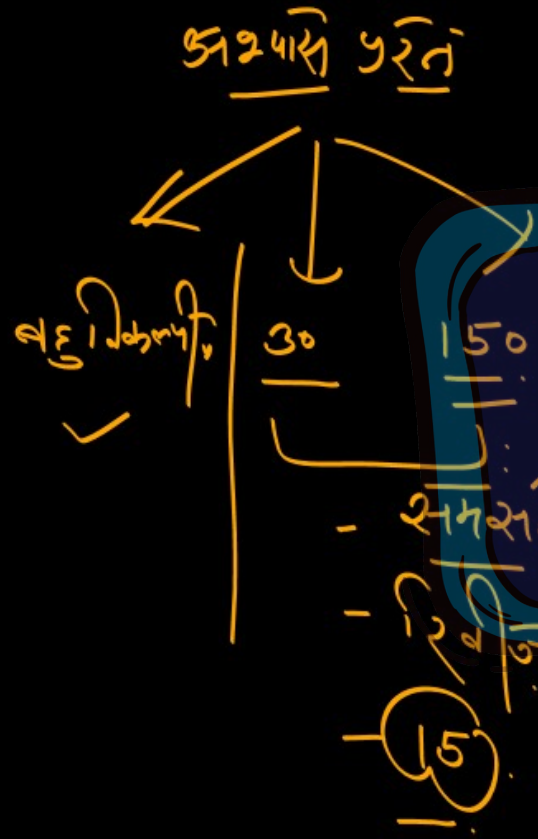
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भारत का किसान पोर्टल

कृषि से संबंधित किसी भी जानकारी की तलाश के लिए किसान पोर्टल किसानों के लिए एक मंच है। किसानों के बीमा, कृषि भंडारण, फसलों, विस्तार गतिविधियों, बीजों, कीटनाशकों, कृषि मशीनरी आदि पर विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है। उर्वरकों, बाज़ार मूल्य, पैकेज और प्रथाओं, कार्यक्रमों, कल्याणकारी योजनाओं के विवरण भी दिए गए हैं। मिट्टी की उर्वरता, भंडारण, बीमा से संबंधित ब्लॉक स्तर का विवरण, प्रशिक्षण आदि एक इंटरेक्टिव मानचित्र में उपलब्ध हैं। उपयोगकर्ता फार्म फ्रैंडली हैंडबुक, योजना दिशा-निर्देश आदि भी डाउनलोड कर सकते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए।

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा भू-उपयोग संवर्ग नहीं है?

(क) परती भूमि

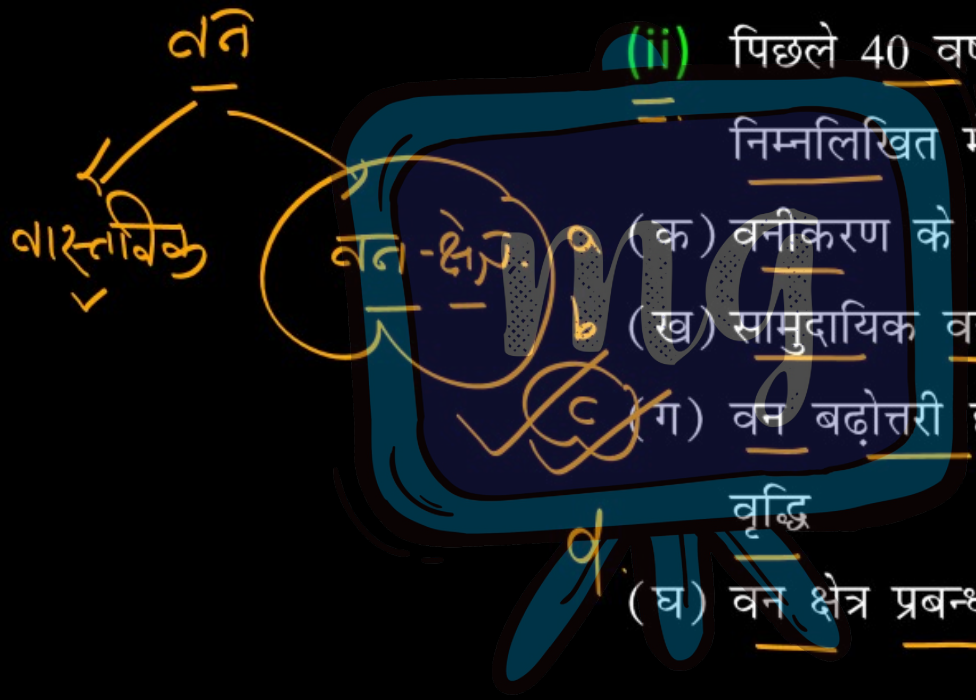
(ख) सीमान्त भूमि

(ग) निवल बोया क्षेत्र

(घ) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(ii) पिछले 40 वर्षों में वनों का अनुपात बढ़ने का निम्नलिखित में से कौन-सा कारण है?

(क) वनीकरण के विस्तृत व सक्षम प्रयास

(ख) सामुदायिक वनों के अधीन क्षेत्र में वृद्धि

(ग) वन बढ़ोत्तरी हेतु निर्धारित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि

(घ) वन क्षेत्र प्रबन्धन में लोगों की बेहतर भागीदारी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



(iii) निम्न में से कौन-सा सिंचित क्षेत्रों में भू-निम्नीकरण का मुख्य प्रकार है?

(क) अवनालिका अपरदन

(ख) वायु अपरदन

(ग) मृदा लवणता

(घ) भूमि पर सिल्ट का जमाव

Under CSR Support by
ipca | Foundation

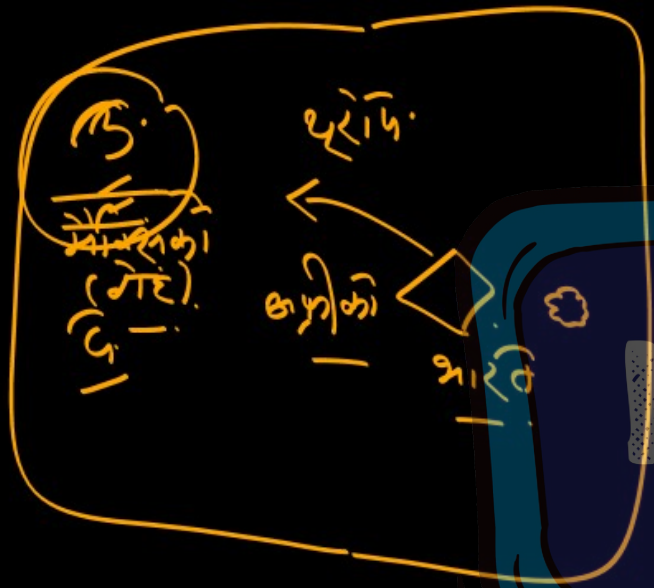
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(iv) शुष्क कृषि में निम्नलिखित में से कौन-सी फसल नहीं बोई जाती!

(क) रागी
(ख) ज्वार
(ग) मूँगफली
(घ) गन्ना

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(v) निम्नलिखित में से कौन-से देशों में गेहूँ व चावल की अधिक उत्पादकता की किस्में विकसित की गई थीं?

(क) जापान तथा आस्ट्रेलिया

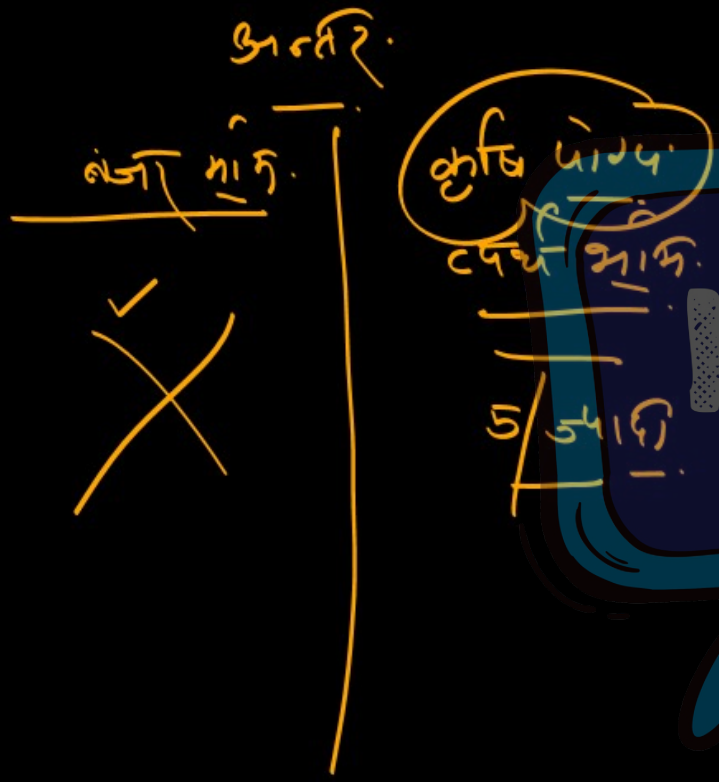
(ख) संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान

(ग) मैक्सिको तथा फिलीपींस

(घ) मैक्सिको तथा सिंगापुर

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।

(i) बंजर-भूमि तथा कृषि योग्य व्यर्थ भूमि में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर – बंजर-भूमि ऐसी भूमि होती है जिसे प्रचलित प्रौद्योगिकी की मदद से कृषि योग्य नहीं बनाया जा सकता, जबकि कृषि योग्य व्यर्थ भूमि ऐसी भूमि होती है जो पिछले पाँच वर्षों तक या अधिक समय तक परती या कृषि रहित हो लेकिन इस भूमि को कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत बोये गये कुल क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

निवल

सकल

(ii) निवल बोये गये क्षेत्र तथा सकल बोये गये क्षेत्र में अन्तर बताएँ।

उत्तर – निवल बोये गये क्षेत्र में वह भूमि सम्मिलित होती है जिस पर फसलें उगायी व काटी जाती हैं, जबकि सकल बोये गये क्षेत्र में एक कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत बोये गये कुल क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(iii) भारत जैसे देश में गहन कृषि नीति अपनाने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर – भारत जैसे देश में कृषि भूमि की कमी तथा मानवीय श्रम की अधिकता है। ऐसी स्थिति में गहन कृषि नीति की आवश्यकता केवल भूमि उपयोग हेतु ही आवश्यक नहीं है वरन् देश के ग्रामीण क्षेत्रों से बेरोजगारी को कम करने के लिये भी आवश्यक है। जिससे कृषि उत्पादन को भी बढ़ाया जा सके।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(iv) शुष्क कृषि तथा आर्द्र कृषि में क्या अन्तर है?

उत्तर - शुष्क कृषि में शुष्कता सहन करने वाली कृषि फसलें (जैसे-रागी, बाजरा ग्वार, चना तथा मूँग) उगाई जाती है आर्द्रता कृषि के अन्तर्गत अधिक पानी की आवश्यकता वाली फसलें (जैसे -चावल, जूट, गन्ना आदि) उत्पादित की जाती हैं आर्द्र कृषि क्षेत्रों में वर्षा कृषि फसलों की आवश्यकता से अधिक प्राप्त होती है। इस कृषि में जल की बाहुल्यता मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें।

(i) भारत के भूसंसाधनों की विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ कौनसी हैं? उनका निदान कैसे किया जाए?

उत्तर – भारत के संसाधनों पर दबाव के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं जिनमें निम्नलिखित पर्यावरणीय समस्याएँ उल्लेखनीय हैं–

(i) मृदा उर्वरकता में ह्रास : कृषि भूमि पर तेजी से बढ़ती जनसंख्या के बढ़ते दबाव से कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से जहाँ एक ओर दलहनों के कृषि क्षेत्र में कमी आ रही है, वहीं

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दूसरी ओर बहु-फसलीकरण में बढ़ोत्तरी होने से परती भूमि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कमी आई है। इससे भूमि में पुनः उर्वरकता पाने की प्राकृतिक प्रक्रिया अवरुद्ध हुई है जैसे नाइट्रोजनीकरण। साथ ही पर्याप्त मात्रा में रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक रसायनों का प्रयोग भी भारतीय कृषकों द्वारा किया जा रहा है। उक्त कारणों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों की मृदा उत्पादकता में ह्रास अनुभव किया जा रहा है। सिंचाई तथा कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों के कारण यह समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कटाव :

(ii) मृदा अपरदन : भारत में समुचित रख-रखाव व प्रबन्धन के अभाव में प्रतिवर्ष लाखों हेक्टेयर भूमि मृदा अपरदन की समस्या से ग्रस्त हो रही है। शुष्क क्षेत्रों, पर्याप्त वर्षा प्राप्त करने वाले वनस्पति विहिन क्षेत्रों, जलोढ़ मिट्टी वाले भागों, कट-फटे पठारी भागों में तथा तीव्र ढाल रखने वाले धरातलीय भू-भागों में मृदा अपरदन प्रमुख रूप से प्रभावी मिलता है।

(iii) लवणता एवं मृदा क्षारता तथा जलाक्रांतता : अभी तक भारत की लगभग 80 लाख हेक्टेयर भूमि लवणता व क्षारता से प्रभावित हो चुकी है। इसके अलावा देश की लगभग 70 लाख हेक्टेयर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूमि जलाक्रांतता के कारण अपनी उर्वरकता खो चुकी है।

(iv) मृदा परिच्छेछिका में जहरीले तत्वों का जमाव : भारतीय कृषकों द्वारा कृषि भूमि में अत्यधिक कीटनाशक रसायनों के प्रयोग से वहाँ की मृदा परिच्छेदिका में जहरीले तत्वों का जमाव बढ़ रहा है जिसके कारण कृषि उत्पाद भी विषैले हो रहे हैं जिनके उपयोग से मानवीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

भूसंसाधनों की पर्यावरणीय समस्याओं का निदान

(i) मृदा उत्पादकता में ह्रास, मृदा अपरदन, लवणता तथा जलाक्रांतता की समस्या से निपटने के लिये कृषि भूमि के समुचित रख-रखाव व प्रबन्धन सम्बन्धी वैज्ञानिक विधियों का समुचित उपयोग आवश्यक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) कृषि फसलों में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का अधिकाधिक उपयोग किया जाये। साथ ही, खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ दलहनी फसलों की कृषि को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाए।

(iii) मृदा परिच्छेदिका में कीटनाशक रसायनों के जमाव को रोकने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की सहायता लेकर फसलों को सुरक्षित किया जाए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

150

(ii) भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कृषि विकास की महत्वपूर्ण नीतियों का वर्णन करें।

उत्तर – भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कृषि विकास की महत्वपूर्ण नीतियाँ : भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय कृषि एक जीविकोपार्जन करने वाली प्रक्रिया के रूप में थी तथा इसकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी। देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार का तात्कालिक उद्देश्य खाद्यान्नों के उत्पादन को बढ़ाना था। इस हेतु सरकार द्वारा निम्नलिखित उपायों को अपनाया गया–

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

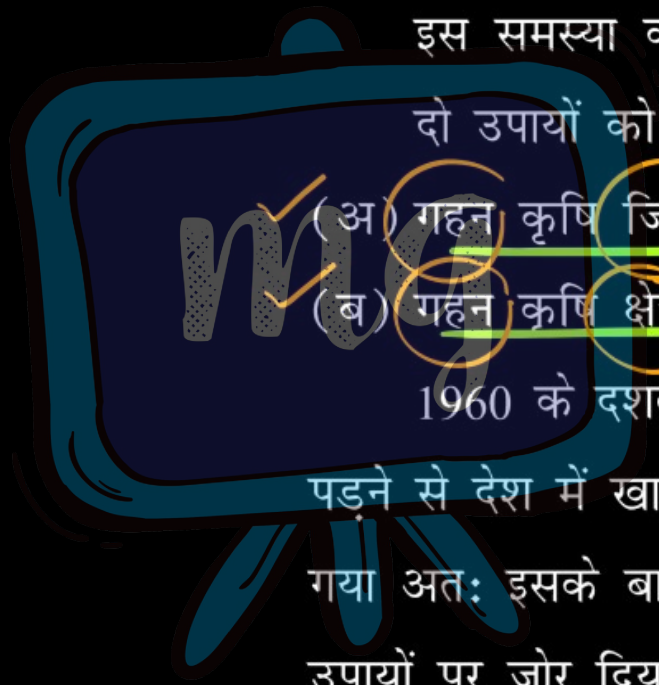
(i) व्यापारिक फसलों के स्थान पर खाद्यान्न फसलों का उगाया जाना।

(ii) कृषि गहनता को बढ़ाना तथा

(iii) कृषि योग्य बंजर भूमि तथा परती भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित करना। यद्यपि प्रारम्भ में इस नीति से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ा लेकिन 1950 के दशक के अंत तक कृषि उत्पादन स्थिर हो गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



इस समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित दो उपायों को बल प्रदान किया गया-

(अ) गहन कृषि जिला कार्यक्रम

(ब) गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम।

1960 के दशक के मध्य में लगातार दो अकाल पड़ने से देश में खाद्यान्न का गम्भर संकट उत्पन्न हो गया अतः इसके बाद कृषि विकास हेतु निम्नलिखित उपायों पर जोर दिया गया-

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1. **अधिक उत्पादन करने वाले बीजों का उपयोग :** 1960 के दशक में कृषि विकास हेतु मेक्सिकन गेहूँ तथा फिलिपींस के चावल की अधिक उपज देने वाली किस्मों की कृषि प्रारम्भ की गई जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश तथा गुजरात के पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ रखने वाले कृषि क्षेत्रों के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। जिसे भारत में हरित क्रान्ति का नाम दिया गया। सन् 1980 के बाद हरित क्रान्ति का विस्तार मध्य भारत तथा पूर्वी भारत के

Under CSR Support by
ipca | Foundation

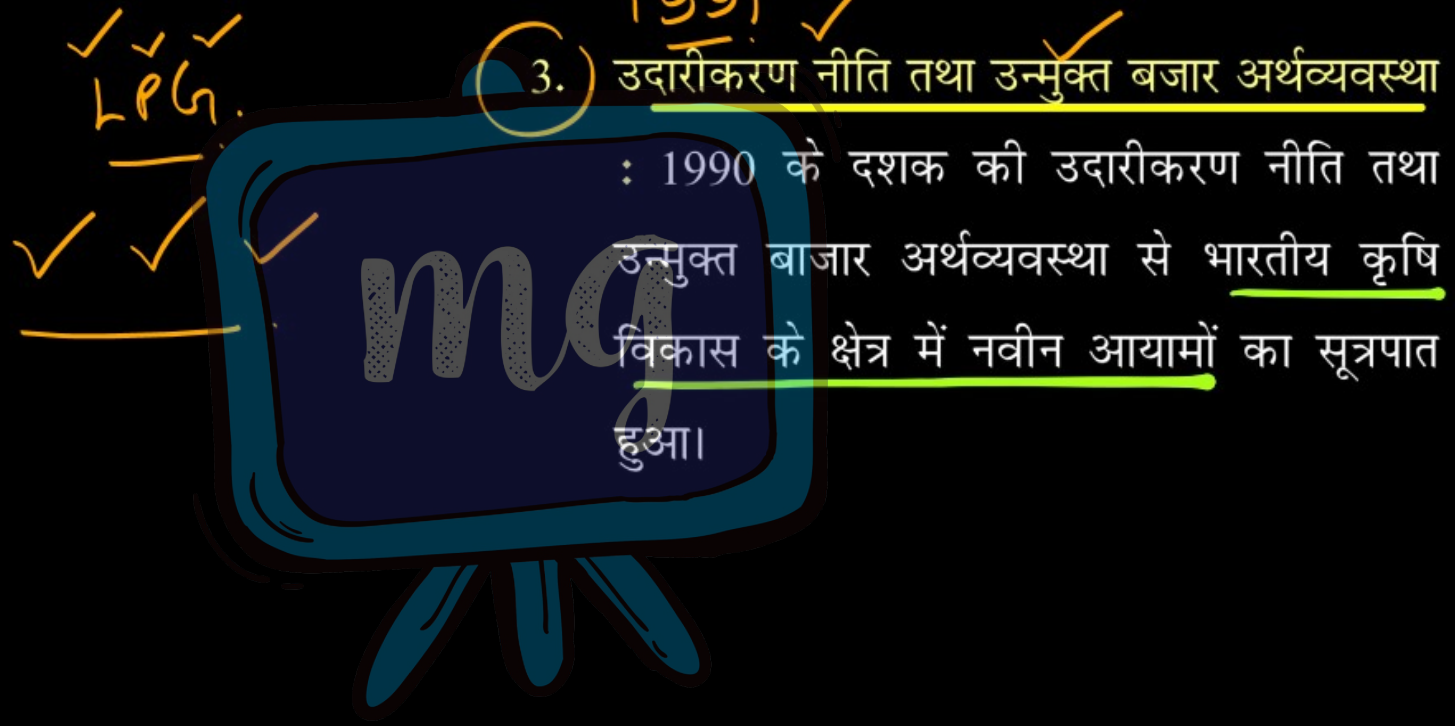
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

विभिन्न भागों में भी सफलतापूर्वक किया गया। हरित क्रान्ति के कारण देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया।

2. कृषि जलवायु नियोजन : 1980 के दशक में भारतीय योजना आयोग ने वर्षा आधारित क्षेत्रों की कृषि समस्याओं पर ध्यान तो दिया ही साथ ही आयोग ने सन् 1988 में कृषि विकास में प्रादेशिक सन्तुलन को प्रात्साहित करने हेतु कृषि जलवायु नियोजन प्रारम्भ किया। इस प्रयास से कृषि, पशुपालन तथा जल कृषि के विकास हेतु संसाधनों के विकास को बल मिला।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



3. उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बजार अर्थव्यवस्था : 1990 के दशक की उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था से भारतीय कृषि विकास के क्षेत्र में नवीन आयामों का सूत्रपात हुआ।